PK टाइम्स

दैनिक **लोक टुडे**

जनता की आवाज...

विश्वसनीय खबरों का सर्वश्रेष्ठ अखबार

pktimesnews.com
loktodaynews.com
PK Times News
thepktimesofficial
pk_timesofficial

वर्ष: 12 | अंक: 332 | मूल्य: 1.00 रुपए | पृष्ठ: 4 | बुधवार 17 जून 2026 | RNI No. RAJHIN/2013/50649

नियति का क्रूर क्रंदन : हमेशा अकेले काम पर जाने वाले चार सगे भाई पहली बार निकले थे साथ, अब कभी नहीं लौटेंगे... का दे गए ‘जख्म’!

बालोतरा जिले के पाटोदी के पास भीषण सड़क हादसे में हंसता-खेलता उजड़ गया परिवार

रोडवेज बस की टक्कर से कार सवार एक ही घर के बुझ गए चार चिराग

सगे भाइयों की मौत से गांव में पसरा मातम, घटना के बाद अस्पताल के बाहर दिया धरना

लोक टुडे। बालोतरा

काल के इस क्रूर चक्र ने सिर्फ चार जिंदगी ही नहीं छीनी, बल्कि एक पूरे हंसते-खेलते कुनबे की रीढ़ तोड़ दी है। इस भीषण हादसे के बाद पीड़ित परिवार के आंगन से उठने वाला करुण क्रंदन पत्थरों को भी पिघला रहा है। नियति ने एक ही झटके में वृद्ध मां की गोद सूनी कर दी, कई सुहाग उजाड़ दिए और मासूम बच्चों के सिर से पिता का साया हमेशा-कहाके लिए छीन लिया। दरअसल, बालोतरा जिले के पाटोदी क्षेत्र में मंगलवार सुबह एक ऐसा दर्दनाक सड़क हादसा हुआ, जिसने एक हंसते-खेलते परिवार को कभी न भूलने वाला जख्म दे दिया। परेऊ की ओर से आ रही एक तेज रफ्तार रोडवेज बस ने गोलियां-परेऊ चौराहे पर सामने से आ रही ऑल्टो कार को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भयावह थी कि कार के परखच्चे उड़ गए और उसमें सवार चारों भाइयों को संभलने का मौका तक नहीं मिला। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई और भारी भीड़ जमा हो गई। टक्कर के दौरान सड़क किनारे खड़ी एक बाइक भी बस की चपेट में आ गई, जिसे बस कुछ दूरी तक घसीटते हुए ले गई। स्थानीय लोगों और पुलिस की मदद से कार में फंसे भाइयों को आनन-फानन में बाहर निकाला गया और पाटोदी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। वहां डॉक्टरों ने दो भाइयों को मृत घोषित कर दिया, जबकि दो अन्य गंभीर घायलों ने नाहटा जिला अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

कोडूका गांव में नहीं जला चूल्हा, परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल -

जैसे ही मृतकों की शिनाख्त कोडूका गांव के निवासी जोगाराम, विश्नाराम, रेखाराम और उदाराम के रूप में हुई, पूरे गांव में सन्नाटा पसर गया। एक ही घर के चार सगे भाइयों की मौत की खबर सुनते ही मां-बाप और परिजनों पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। पूरे गांव में शोक की लहर है और किसी भी घर में चूल्हा नहीं जला है।

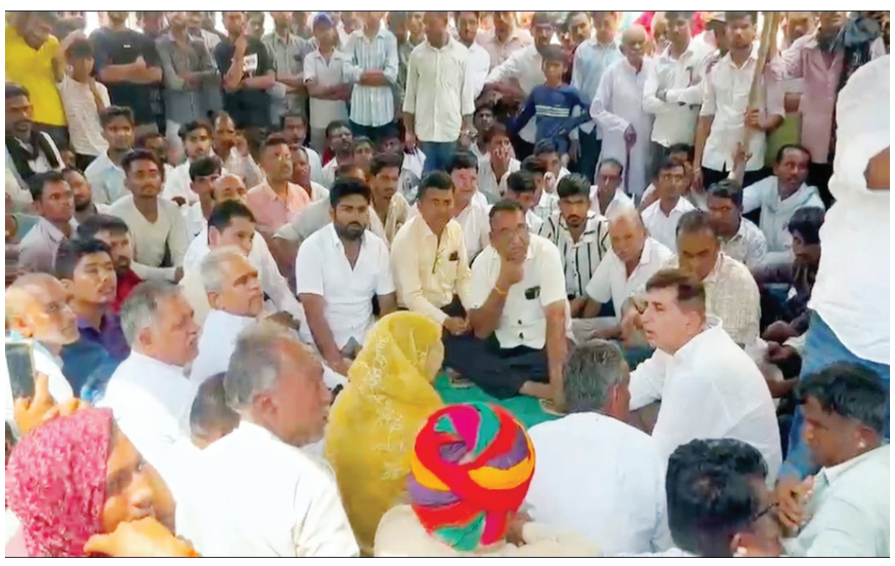

मंजर ऐसा कि हर एक की रूह कांप गई और छलक पड़े आंखों से आंसू -

मंगलवार की अभागन सुबह पाटोदी के गोलियां-परेऊ चौराहे पर काल बनकर आई। एक तेज रफ्तार रोडवेज बस ने कार को ऐसी बेरहम टक्कर मारी कि पल भर में एक हंसता-खेलता परिवार तबाह हो गया। हादसे में कोडूका गांव के भंवराराम मेघवाल के चार सगे बेटों की तड़प-तड़प कर मौत हो गई। जिसने भी दुर्घटना के बाद का मंजर देखा, उसकी रूह कांप गई और आंखों से आंसू छलक पड़े।

कार बनी लोहे का पिंजरा, भाइयों ने तड़पते हुए तोड़ा दम -

टक्कर इतनी भयानक थी कि कार पिचक कर लोहे का कंकाल बन गई। चारों भाई उसी के भीतर लहूलुहान हालत में फंस गए। चीख-पुकार सुनकर जब आस-पास के लोग दौड़े, तो कार के अंदर का नजारा देखकर उनके कलेजे मुंह को आ गए। भाई एक-दूसरे के ऊपर गिरे हुए थे और जिंदगी के लिए तड़प रहे थे। लोहे की चादरों को काटकर जब उन्हें बाहर निकाला गया, तब तक दो भाइयों की सांसें थम चुकी थीं। बाकी दो भाइयों ने अस्पताल के बिस्तर पर दम तोड़ दिया।

रोजाना अलग-अलग काम पर जाते थे, घटना के दिन ही एक साथ निकले -

मृतकों के चचेरे भाई गोपाल निवासी कोडूका बालोतरा ने बताया- उदाराम (39), रेखाराम (35), जोगाराम (31) और विशनाराम (29) मकान बनाने का काम करते थे। सोमवार सुबह 9 बजे कार लेकर कालेवा गांव जा रहे थे। 6 किलोमीटर दूर पाटोदी गांव के पास जोधपुर की तरफ जा रही रोडवेज बस ने टक्कर मार दी। गोपाल ने बताया- अब परिवार में माता-पिता, तीन भाइयों की पत्नियां और बच्चे हैं। उदाराम के दो बेटे और एक बेटी, रेखराम के दो बेटे, विशनाराम के दो बेटे हैं, जबकि जोगाराम की शादी नहीं हुई थी। वह बोल नहीं सकता था। वे हमेशा अलग-अलग काम पर जाते थे, लेकिन मंगलवार को ही एक ही जगह काम होने पर एक साथ निकले थे।

अस्पताल के बाहर धरना, उचित मुआवजे की मांग

हादसे से आक्रोशित ग्रामीण और जनप्रतिनिधि (सांसद उम्मेदाराम बेनीवाल, बायतु विधायक हरीश चौधरी, पूर्व विधायक गोपाराम मेघवाल, आरएलपी नेता थानसिंह डोली, जोगेंद्र प्रजापत व परिजन-ग्रामीण पाटोदी ष्टाष्ट के बाहर धरने पर बैठ गए हैं। परिजनों और ग्रामीणों की मांग है कि हादसे की निष्पक्ष जांच कर दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाए और पीड़ित परिवार को उचित आर्थिक सहायता दी जाए। मौके पर एएसपी हरफूलसिंह, डीएसपी योगेश चौधरी, पचपदरा सा्हृ गीता चौधरी मय भारी पुलिस बल मौके पर स्थिति को संभालने के लिए वार्ता का दौर जारी है।

नियति के इस क्रूर प्रहार से सहमा हर दिल -

इस हादसे ने यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि जीवन कितना क्षणभंगुर है। सुबह जो भाई हंसते-मुस्कुराते हुए घर से निकले थे, शाम को उनकी राख बची। गांव के बुजुर्ग सुबकते हुए बस यही कह रहे थे कि विधाता भी इतना निष्ठुर हो सकता है, इसकी कल्पना किसी ने नहीं की थी। आज कोडूका गांव में सिर्फ धुआं है, राख है और एक कभी न खत्म होने वाला सन्नाटा है, जो चीख-चीख कर कह रहा है कि इंसान चाहे कितनी भी कोशिश कर ले, नियति के क्रूर विधान के आगे वह हमेशा लाचार और नतमस्तक है।

मां की गोद सूनी, पिता का साया उठा और तीन का उजड़ा सुहाग -

हादसे की खबर जैसे ही घर पहुंची, कोहराम मच गया। जिस मां ने अपनी कोख से इन चारों बेटों को जन्म दिया था, वह बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ी। मां बार-बार अपने बेटों के नाम पुकार कर छाती पीट रही है- ‘कोई मेरे लाल को वापस ला दो।’ पत्नियों-बच्चों और बहनों का रो-रोकर बुरा हाल है, उनकी चीत्कार सुनकर वहां मौजूद हर शख्स की आंखें नम हो गईं। गांव के बुजुर्गों ने कहा कि उन्होंने अपने जीवन में कभी ऐसा भयावह और दुखद मंजर नहीं देखा।

‘राजस्थान में हादसों का मंगलवार’ चार सड़क हादसों में 14 लोगों की मौत, कई घायल

लोक टुडे। जयपुर

राजस्थान के लिए मंगलवार का दिन बेहद अमंगल साबित हुआ। प्रदेश के अलग-अलग जिलों में हुए चार भीषण सड़क हादसों में कुल 14 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि कई लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। सबसे बड़ा हादसा बालोतरा जिले में हुआ, जहां एक ही परिवार के चार सगे भाइयों की जान चली गई, वहीं बीकानेर में भी एक दर्दनाक दुर्घटना में एक ही परिवार के 6 लोगों ने दम तोड़ दिया। इसके अलावा जयपुर और पाली में भी जानलेवा हादसे सामने आए हैं। पुलिस ने सभी मामलों की जांच शुरू कर दी है।

पाली : अनियंत्रित होकर पलटी कार, बुजुर्ग महिला समेत दो की मौत -

पाली जिले के सदर थाना क्षेत्र के तहत मंडिया बाईपास के पास एक तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर हाईवे पर कई बार पलट गई। इस दुर्घटना में कार सवार एक बुजुर्ग महिला और एक पुरुष की मौके पर ही जान चली गई, जबकि कार में सवार एक अन्य महिला गंभीर रूप से घायल हो गई, जिसका अस्पताल में इलाज जारी है।

बीकानेर : भीषण भिड़ंत में हरियाणा के एक ही परिवार के 6 लोगों ने गंवाई जान -

बीकानेर के श्रीडूंगरगढ़ क्षेत्र में एक और रूह कंपा देने वाला हादसा सामने आया। यहां वाहनों के बीच हुई भीषण टक्कर में गाड़ी पूरी तरह चकनाचूर हो गई हादसे में एक ही परिवार के 6 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस के अनुसार, मृतक हरियाणा के रहने वाले बताए जा रहे हैं। पुलिस ने शवों को स्थानीय अस्पताल भिजवाकर उनके परिजनों को सूचित कर दिया है।

जयपुर : तेज रफ्तार ट्रोले ने बाइक को कुचला, मां-बेटे की मौत -

राजधानी जयपुर के जयपुर-सीकर हाईवे पर नींदड़ मोड़ के पास एक दर्दनाक हादसा हुआ। हरमाड़ा थाना क्षेत्र में सुबह सीमेंट से भरे एक तेज रफ्तार ट्रोले ने आगे चल रही मोटरसाइकिल को कुचल दिया। इस हादसे में बाइक सवार 40 वर्षीय महिला संगीता कंवर और उनके बेटे की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद हाईवे पर लंबा जाम लग गया, जिसे पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद खुलवाया।

राजस्थान की पचपदरा रिफाइनरी ईंधन उत्पादन को तैयार, प्रधानमंत्री 4 जुलाई को कर सकते हैं उद्घाटन

जयपुर।

राजस्थान के बालोतरा जिले में स्थित बहुप्रतीक्षित पचपदरा रिफाइनरी में इस महीने के अंत तक पेट्रोल और डीजल का उत्पादन शुरू होने की उम्मीद है। आधिकारिक सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 4 जुलाई को रिफाइनरी का उद्घाटन किए जाने की संभावना है। इस वर्ष रिफाइनरी के चालू होने में कई बार देरी हुई है। उद्घाटन समारोह पहले 28 जनवरी को प्रस्तावित किया गया था, जिसे बाद में 21 अप्रैल के लिए पुनर्निर्धारित किया गया।

हालांकि, रिफाइनरी के क्रूड डिस्टिलेशन यूनिट-वैक्यूम डिस्टिलेशन यूनिट खंड में एक एक्सचेंजर यूनिट में विस्फोट के बाद 20 अप्रैल को भीषण आग लगने के कारण कार्यक्रम रद्द कर दिया गया।

हालांकि आधिकारिक घोषणा अभी बाकी है, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी के भव्य स्वागत की तैयारियों में जोर-शोर से हलचल मची हुई है।

हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) राजस्थान रिफाइनरी परियोजना की प्रगति की समीक्षा करते हुए राज्य के मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने सोमवार को अधिकारियों को शेष कार्यों में तेजी लाने और पेट्रोलियम उत्पादों का उत्पादन जल्द से जल्द शुरू करने का निर्देश दिया।

उत्पादन इसी महीने शुरू करने का लक्ष्य

सरकारी सचिवालय में आयोजित समीक्षा बैठक के दौरान, श्रीनिवास ने बताया कि पेट्रोल और डीजल उत्पादन की तैयारियां अंतिम चरण में हैं और उत्पादन इसी महीने शुरू करने का लक्ष्य है।

बैठक में परियोजना से जुड़े विभिन्न विभागों द्वारा किए जा रहे बुनियादी ढांचे के विकास और चल रहे कार्यों की स्थिति का भी आकलन किया गया। राजस्थान के औद्योगिक विकास में रिफाइनरी के महत्व पर जोर देते हुए मुख्य सचिव ने सभी संबंधित विभागों को निर्देश दिया कि वे निर्धारित समय सीमा के भीतर लंबित कार्यों को पूरा करें और साथ ही घनिष्ठ समन्वय बनाए रखें।

समीक्षा बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव (जल संसाधन) अभय कुमार, अतिरिक्त मुख्य सचिव (खान एवं पेट्रोलियम) अपर्णा अरोरा और विशेष सचिव नम्रता वृष्णि सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

सम्पादकीय

चढ़ावे की चोरी

अयोध्या में श्रीराम मंदिर के चढ़ावे में चोरी का मामला करोड़ों हिंदुओं की आस्था को ठेस पहुंचाने वाला है। सदियों के संघर्ष और प्रतीक्षा के बाद बना यह मंदिर विश्व भर के हिंदुओं की श्रद्धा का केंद्र है। ऐसे मंदिर में चढ़ावे की चोरी की घटना को बहुत ही गंभीरता से लेने की आवश्यकता थी, लेकिन कोई नहीं जानता कि दान की राशि में हेराफेरी की बात सामने आते ही उच्चस्तरीय जांच का निर्णय क्यों नहीं लिया गया?

इस मामले में जिस प्रकार एफआईआर दर्ज कराने की आवश्यकता नहीं समझी गई, उससे अनेक सवाल खड़े होते हैं। यह विचित्र है कि राम मंदिर के चढ़ावे में चोरी की भनक सबसे पहले विपक्षी नेताओं को लगी और उनकी ओर से आवाज उठाने के बाद ही मंदिर ट्रस्ट के पदाधिकारियों का ध्यान इस ओर गया। इससे तो यही इंगित होता है कि दान में मिले धन के प्रबंधन की कोई उचित व्यवस्था नहीं थी। कम से कम अब तो ऐसा अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए।

यह समझना कठिन है कि चढ़ावे की चोरी का मामला सामने आने के बाद ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने इससे इन्कार क्यों किया कि इस तरह की कहीं कोई घटना हुई है? इसके उपरांत जब दान राशि की गिनती से जुड़े लोगों के ठिकानों से लाखों रुपये मिले, तब जाकर इस मामले में थोड़ी गंभीरता दिखाई गई। इनमें से कुछ व्यक्ति तो ऐसे हैं, जिन्होंने महंगी संपत्ति खरीदी और अपने वैभव का सार्वजनिक प्रदर्शन करने में लगे हुए थे। इस सबको देखते हुए यह कहना कठिन है कि दान की राशि में हेराफेरी का सिलसिला पिछले कितने समय से चला आ रहा था।

यह ठीक है कि अंततः ट्रस्ट के आग्रह पर एक विशेष जांच दल का गठन कर दिया गया है। यह जांच दल दानपात्रों के सुरक्षा प्रबंध के साथ राशि गिनने और उसे बैंक में जमा करने की प्रक्रिया जांचेगा, लेकिन उचित यह होगा कि यह दल उन कारणों की तह तक भी जाए, जिनके चलते आरंभ में ही चढ़ावे की राशि में हेराफेरी का पता नहीं चल सका।

किसी के लिए भी यह समझना कठिन है कि इतने प्रतिष्ठित मंदिर में पहले दिन से ही ऐसी व्यवस्था क्यों नहीं की गई कि दान में मिली पाई-पाई का रखरखाव सही तरीके से हो? किसी को इस प्रश्न का उत्तर देना चाहिए कि प्रारंभ में ही उस कक्ष में सीसीटीवी कैमरे क्यों नहीं लगाए गए, जिसमें दानपात्रों को खोला जाता था और फिर राशि की गिनती होती थी।

उचित यह होगा कि विशेष जांच दल अपनी छानबीन इस तरह करे कि सभी दोषी पकड़े जाएं और ट्रस्ट के जिन भी लोगों ने अपेक्षित जिम्मेदारी का परिचय नहीं दिया, उन्हें भी जवाबदेह बनाया जाए। यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि श्रद्धा का कोई भी केंद्र हो, वहां यदि भक्तों के दान की राशि के साथ किसी भी तरह की हेराफेरी होती है तो उनकी आस्था को गहरी चोट पहुंचती है।

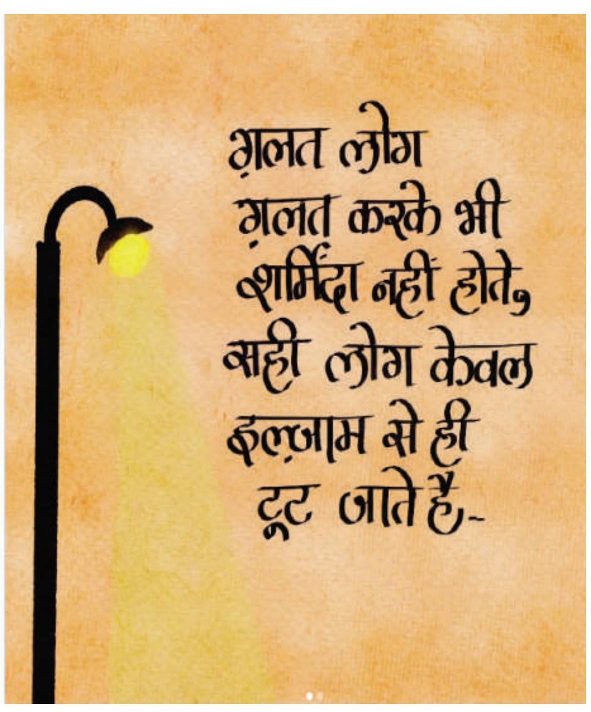

सत्ता के विस्तार की भाजपाई रणनीति

राजकुमार सिंह।

सरकारों द्वारा अपने 100 दिन का भी जश्न जोर-शोर से मनाने के दौर में नरेन्द्र मोदी सरकार का 13वें वर्ष में प्रवेश बड़ी उपलब्धि है। लोकसभा में मात्र दो सीटों से शुरुआत करने वाली भाजपा के लिए यह ऐतिहासिक उपलब्धि भी है कि केंद्र में लगातार तीसरी बार उसकी सरकार होने के साथ ही 22 राज्यों में भी उसकी या उसके नेतृत्व वाले राजग की सत्ता है।

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में साढ़े चार दशक में सत्ता का ऐसा सफर किसी भी राजनीतिक दल के लिए प्रेरक हो सकता है और लक्ष्य भी। भाजपा के पूर्ववर्ती जनसंघ को सीमित सत्ता-सफलताएं गैर कांग्रेसी दलों से गठबंधन में ही मिलीं। हालांकि 1980 में जनसंघ ने भाजपा के रूप में अपनी पृथक वैचारिक पहचान की राह पर लौटने का फैसला किया।

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद कांग्रेस के लिए उपजी सहानुभूति लहर में हुए 1984 के अपने पहले ही चुनाव में भाजपा मात्र दो लोकसभा सीटों पर सिमट गई थी। अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी जैसे दिग्गजों के नेतृत्व में भी भाजपा को राजनीतिक स्वीकार्यता और लोकप्रियता बढ़ाने के लिए संघर्ष करना पड़ा।

बोफोर्स तोप सौदे में दलाली के आरोपों की पृष्ठभूमि में कांग्रेस विरोधी माहौल में हुए 1989 के लोकसभा चुनाव से केंद्र में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार सत्तारूढ़ होने में वाम मोर्चा और भाजपा दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। राष्ट्रीय मोर्चा के मुख्य घटक जनता दल में विश्वनाथ प्रताप सिंह-देवीलाल और चंद्रशेखर के बीच सत्ता संघर्ष से ही मंडल-कमंडल के बीच राजनीतिक ध्रुवीकरण हुआ, जिससे कांग्रेस कमजोर होती गई और भाजपा मजबूत।

कांग्रेस की कमजोरी उसकी संगठनात्मक निष्क्रियता का भी परिणाम रही, जबकि भाजपा ने लगातार कड़ी मेहनत से 'मंडल' को भी 'कमंडल' में समाहित करते हुए जनाधार का विस्तार किया। 1991 में चुनाव प्रचार के दौरान राजीव गांधी की हत्या से उपजी सहानुभूति की लहर से कांग्रेस पीवी नरसिंह राव के नेतृत्व में केंद्र में अल्पमत सरकार बनाने में तो सफल हो गई, लेकिन पहली बार 120 सीटों के साथ भाजपा मुख्य विपक्षी दल बन गई।

राव सरकार की विदाई के बाद 1996 में 161 सीटों के साथ लोकसभा में सबसे बड़े दल के रूप में उभरी भाजपा पहली बार केंद्र में सरकार बनाने में सफल हुई, लेकिन विश्वासमत हासिल करने से पहले ही 13वें दिन वाजपेयी ने प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। सबसे बड़े दल के विरुद्ध राजनीतिक गोलबंदी से बनी कांग्रेस की कठपुतली गठबंधन सरकारों को मतदाताओं ने जनादेश का अपमान माना और 1998 में भाजपा को 182 सीटों के साथ फिर सबसे बड़ा दल बना दिया।

इस बीच भाजपा ने अन्य दलों के साथ रिश्ते बनाते हुए राजग का भी विस्तार किया, लेकिन शह-मात के खेल में सरकार साल भर ही चल पाई। बहुचर्चित कारगिल प्रकरण के बावजूद 1999 में भाजपा की सीटें आश्चर्यजनक रूप से न बढ़ीं, न घटीं, लेकिन 'शाइनिंग इंडिया' की आत्ममुग्धता का शिकार होकर समय पूर्व लोकसभा चुनाव कराने से पहले वाजपेयी सरकार स्थिर ही नजर आ रही थी।

वाजपेयी सरीखे विराट राजनेता को राजनीति में 'नौसिखिया' बताई जा रहीं सोनिया गांधी ने गठबंधन की बिसात से 2004 के लोकसभा चुनाव में मात दे कर देश-दुनिया को चौंका दिया। खुद प्रधानमंत्री बनने के बजाय सोनिया ने मनमोहन सिंह को चुना, जिनके नेतृत्व में 2009 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस 1984 के बाद पहली बार 200 सीटों का आंकड़ा भी पार कर गई, जबकि भाजपा 138 से फिसलते हुए 116 पर जा पहुंची।

मनमोहन सरकार के पतन के बाद मोदी के नेतृत्व में चार दशक बाद पहली बार किसी दल को अपने दम पर पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ और उसके बाद देश के राजनीतिक इतिहास ने एक नई करवट ली। भाजपा ने राजनीतिक रूप से अनुर्वर समझे जाने वाले राज्यों में भी अपनी सत्ता का जैसा विस्तार किया है, वह अप्रत्याशित ही कहा जाएगा। मोदी के 'कांग्रेसमुक्त भारत' के नारे की अब भी चर्चा हो ही जाती है, लेकिन

भाजपा के अभूतपूर्व विस्तार में विपरीत विचारधारा वाले अन्य दलों से आए नेताओं की भी एक बड़ी भूमिका रही है, जिनमें सबसे ज्यादा संख्या कांग्रेसियों की ही है।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे भाजपा में शामिल हुए कांग्रेस नेताओं का अक्सर उल्लेख करते हैं। बेशक भाजपा ने कांग्रेस, खासकर नेहरू परिवार की छवि को कमजोर कर सकने वाले हर कांग्रेसी के लिए अपने दरवाजे खोले, लेकिन खुद को मजबूत बनाने वाले कांग्रेसियों पर विशेष फोकस भी किया। परंपरागत भाजपाई एजेंडा से अप्रभावित रहे पूर्वोत्तर राज्यों में भी अगर आज भाजपा या राजग सरकारें हैं, तो उसमें उस रणनीतिक जोड़तोड़ की बड़ी भूमिका है।

भाजपा की इस दोहरी राजनीतिक रणनीति का सबसे बड़ा उदाहरण हिमंत बिस्वा सरमा हैं, जिन्होंने असम गण परिषद से राजनीति शुरू की और फिर कांग्रेस सरकारों में भी मंत्री रहे। गोगोई परिवार के प्रति मोह के चलते राहुल गांधी द्वारा भाव न दिए जाने पर हिमंत ने 2015 में कांग्रेस छोड़ी। लगभग पूरे पूर्वोत्तर में भाजपाई सत्ता का विस्तार करवाने के बाद उन्हें 2021 में असम का मुख्यमंत्री बनाया गया, जिनके नेतृत्व में इस बार भाजपा ने 126 में से मात्र 89 सीटों पर लड़कर 82 सीटों के साथ अकेले दम बहुमत हासिल करने का करिश्मा कर दिखाया।

दरअसल अपने लिए अनुकूल अन्य दलों के ऐसे संभावनाशील नेताओं की लंबी सूची है, जिन पर दांव लगा कर भाजपा तीन-चौथाई भारत के सत्ता सिंहासन तक पहुंची है। 'कमल' थाम कर सत्ता सिंहासन तक पहुंचने वाले गैर-भाजपाई मूल के सबसे नए मुख्यमंत्री बंगाल में सुवेंदु अधिकारी हैं, जबकि बिहार के पहले भाजपाई मुख्यमंत्री बने सम्राट चौधरी की पृष्ठभूमि भी राजद और जदयू की है।

जातीय हिंसा के चलते मणिपुर का मुख्यमंत्री का पद छोड़ने वाले एन. बीरेन सिंह, अरुणाचल के मुख्यमंत्री पेमा खांडू और त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा भी इसी भाजपाई रणनीति के उदाहरण हैं। बेशक भाजपा दावा करती है कि वह विचारधारा से विचलित नहीं हुई, बल्कि अन्य दलों के नेताओं ने उसकी विचारधारा को अपनाया है।

मानवता ने चुकाई महत्वाकांक्षी युद्धों की कीमत

सुरेश सेठ

अमेरिका-ईरान युद्ध से यूं तो पूरी दुनिया प्रभावित है, लेकिन विकासशील अर्थव्यवस्थाएं गहरे तक प्रभावित हो रही हैं। सदियों से महाशक्तियों की महत्वाकांक्षा का खमियाजा वे लोग भुगतते हैं, जिनकी युद्ध में कोई भूमिका नहीं होती।

पिछले तीन वर्षों से अधिक समय से विश्व अलग-अलग क्षेत्रों में युद्ध की विभीषिका झेल रहा है। रूस-यूक्रेन युद्ध? के चलते दोनों देशों की संपत्ति और विश्व आपूर्ति शृंखला को नुकसान हुआ। दुनिया की अर्थव्यवस्था लड़खड़ाई और श्रम शक्ति का विस्थापन हुआ। लेकिन लड़ाई समाप्त होने का नाम नहीं ले रही।

पश्चिमी एशिया में अमेरिका, इस्राइल और ईरान के बीच जारी तनाव और अस्थिर संघर्ष, भले ही टलने की स्थिति में दिखे, लेकिन यह मानवता के लिए गंभीर क्षति पहुंचा रहा है। साथ ही चीन-ताइवान तनाव से एक और वैश्विक युद्ध का खतरा बढ़ता दिखता है। यदि यह संघर्ष भारत की सीमाओं तक पहुंचा, तो न केवल विश्व अर्थव्यवस्था प्रभावित होगी, बल्कि भारत भी तमाम आर्थिक चुनौतियों का सामना कर सकता है।

अमेरिका-ईरान युद्ध से यूं तो पूरी दुनिया प्रभावित है, लेकिन विकासशील अर्थव्यवस्थाएं गहरे तक प्रभावित हो रही हैं। यह युद्ध 28 फरवरी को अमेरिका द्वारा खाड़ी स्थित ईरान को परमाणु शक्ति बनने से रोकने और संवर्धित यूरेनियम पर कब्जा करने के कथित लक्ष्य के साथ शुरू हुआ। वास्तव में इस्राइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू का युद्ध में कूदने का उद्देश्य अपनी राजनीतिक सुरक्षा था। अमेरिका ने अपनी शक्ति पर गुमान करते हुए युद्ध

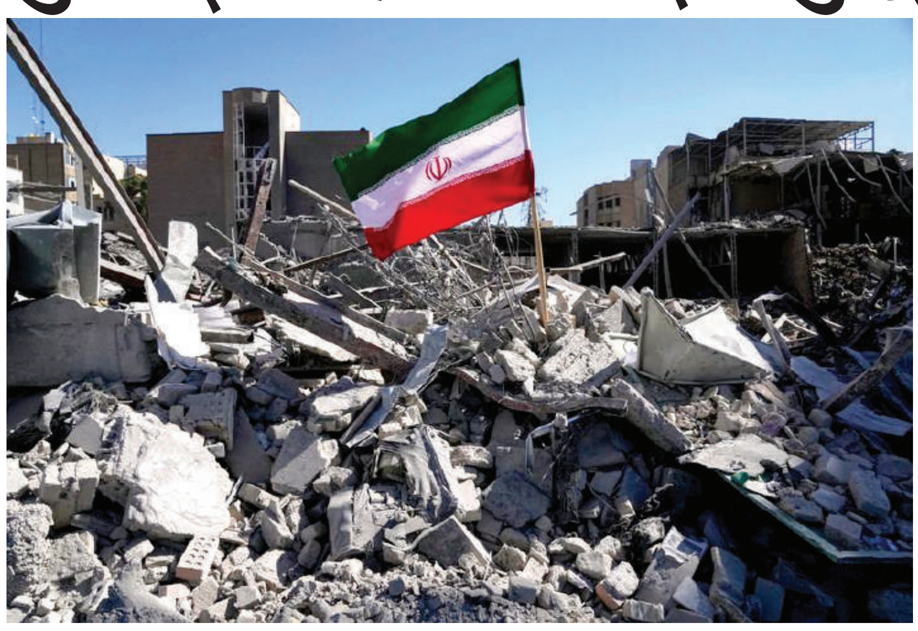

छेड़ा, लेकिन इसके परिणामस्वरूप संघर्ष की विभीषिका से पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था चरमरा गई।

इस संघर्ष का परिणाम यह हुआ कि अमेरिका-ईरान युद्ध में 14 देश प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शामिल हो गए, क्योंकि खाड़ी देशों में अमेरिकी सैन्य अड्डे स्थित थे। ईरान ने मिसाइल और ड्रोन से हमले किए। दो महीने बाद शांति वार्ता शुरू हुई, लेकिन दोनों पक्ष बातचीत के लिए तैयार नहीं थे। अमेरिका संवर्धित यूरेनियम पर कब्जा और होर्मुज मार्ग खुलवाना चाहता है, जबकि ईरान के फ्रीज खातों को खोलने और प्रतिबंध हटाने पर सहमति नहीं दे रहा था।

दूसरी ओर, ईरान ने होर्मुज के मुहाने पर नाकाबंदी कर दी है, जिससे तेल और गैस के टैंकर अटक गए हैं। अमेरिका भी ओमान की खाड़ी में नाकाबंदी कर रहा है। इससे दुनिया भर में कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस और उनसे बनने वाले उत्पादों की आपूर्ति का संकट पैदा हुआ है, जिससे तमाम देशों में महंगाई और ऊर्जा संकट उत्पन्न हो गया है।

आर्थिक विश्लेषक कहते हैं कि इस युद्ध? के कारण दुनिया को इस समय तक अनुमानित 474 लाख करोड़ रुपये तक का नुकसान हो चुका है। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन चेताता है कि अगर यूं ही ऊर्जा आपूर्ति बाधित रही तो पूरी दुनिया की जीडीपी घट जाएगी और रोजगार के अवसर समाप्त हो जाएंगे।

ईरान की परमाणु शक्ति, होर्मुज मार्ग, फ्रीज की गई संपत्तियां और लेबनान में हिज्बुल्लाह से जुड़े मुद्दे शांति स्थापना में प्रमुख बाधाएं हैं। यद्यपि अमेरिका और ईरान ने युद्धविराम बढ़ाया था, फिर भी परमाणु कार्यक्रम और फ्रीज फंडों को लेकर दोनों के मतभेद लंबे समय तक बने रहे। इन विवादों के कारण संघर्ष पूरी तरह समाप्त नहीं हो पा रहा था।

विश्व की शक्तियों को समझना चाहिए कि युद्ध? को लंबे समय तक नहीं चलाया जा सकता। अमेरिकी संसद बार-बार कहती रही है कि यह युद्ध? तुरंत बंद होना चाहिए लेकिन ट्रम्प अपनी विजेता की छवि बनाकर ही इस युद्ध? से निकलना चाह रहे थे, जो तत्काल संभव नजर नहीं आता था।

ईरान ने अमेरिका जैसी महाशक्ति और इस्राइल की एकजुटता से मुश्किल लड़ाई लड़ी है, लेकिन अमेरिका का लगातार प्रतिरोध किया है। किसी भी समाधान के लिए दोनों पक्षों को लचीलापन दिखाना चाहिए, ताकि युद्ध की विभीषिका खत्म हो। तभी विश्व की आपूर्ति श्रृंखला को सामान्य बनाया जा सकता है।

यह भी हकीकत है कि पाकिस्तान और कतर के बैक-चैनल प्रयास तक अमेरिकाङ्कईरान टकराव का समाधान समय रहते खत्म कर पाये। जिससे काफी समय तक सीमित युद्ध और होर्मुज नाकाबंदी जारी रही।?जिसके कारण दुनिया आर्थिक संकट, महंगे ईंधन और ऊर्जा की कमी जैसी समस्याओं का सामना करती रही। परिणामस्वरूप, वैश्विक स्तर पर आर्थिक अस्थिरता बढ़ती रही।

वहीं दूसरी ओर आशंका जतायी जा रही है कि इस्राइलङ्कहिज्बुल्लाह की झड़पें लेबनान में बड़े युद्ध का रूप ले सकती हैं। जिसका ईरान लगातार विरोध करता रहा है। यह मुद्दा भी समझौते होने में बाधक बना रहा है। युद्ध के चलते स्थिति इतनी गंभीर है कि 14 देशों का एयरस्पेस बंद हो गया है, हजारों उड़ानें रद्द या डाइवर्ट हुई हैं, और ईंधन की कीमतें 130 प्रतिशत बढ़ गई हैं। खाड़ी और भारत के यात्रा रूट पर टिकटों की कीमतें भी अप्रत्याशित रूप से बढ़ी हैं। आर्थिक संकट आम आदमी की जीवनशैली पर भारी पड़ रहा है और विकास के लक्ष्य बेअसर हो रहे हैं। इस बीच, हथियार व्यापार और युद्धरत देशों की राजनीति मानवता और शांति के मूल्यों को भूलती नजर आ रही है। इस समय शांति और अहिंसा के संदेश कोरे भाषण लगने लगे हैं।

विशेष आलेख /राशिफल

राष्ट्र निर्माण की अदृश्य आधारशिला का मूल्यांकन

यदि किसी परिवार की आय उसके आर्थिक आधार को सुदृढ़ करती है, तो घर के भीतर किया जाने वाला श्रम उस आधार को स्थायित्व प्रदान करता है। दोनों में से किसी एक के अभाव में परिवार की संरचना पूर्ण नहीं हो सकती। इसलिए घरेलू श्रम को केवल एक पारिवारिक दायित्व मानना उसके वास्तविक महत्व को कम करके आंकना होगा। हाल ही में देश की सर्वोच्च अदालत ने 'शिशुपाल उर्फ शिशराम एवं अन्य बनाम सुरजीत एवं अन्य' मामले में एक महत्वपूर्ण निर्णय देते हुए भारतीय समाज के समक्ष उपस्थित एक ऐसे प्रश्न को पुनः केंद्र में ला खड़ा किया है, जिस पर लंबे समय से पर्याप्त गंभीरता से विचार नहीं किया गया। न्यायालय ने गृहिणियों को 'राष्ट्र निर्माता' की संज्ञा देते हुए कहा कि उनके द्वारा किया जाने वाला घरेलू श्रम केवल परिवार के संचालन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

न्यायालय ने निर्देश देते हुए कहा कि 'जब कोई मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण, उच्च न्यायालय अथवा यह न्यायालय किसी ऐसे मामले पर विचार कर रहा हो, जिसमें एक गृहिणी की मृत्यु हुई हो, तब मुआवजे की गणना में गृहिणियों के साथ होने वाली उस अंतर्निहित असमानता को दूर करने के लिए, जो उनकी अनुमानित आय के अत्यंत रूढ़िवादी आकलन के कारण उत्पन्न होती है, 'घरेलू देखभाल की हानि' के अंतर्गत 30,000 रुपये प्रतिमाह की एक समेकित राशि जोड़ी जानी चाहिए।' न्यायालय ने यह भी निर्देश दिया कि इस राशि में प्रत्येक तीन वर्ष के अंतराल पर संचयी रूप से 10 प्रतिशत की वृद्धि की जाएगी।

प्रथम दृष्टया यह निर्णय मोटर दुर्घटना मुआवजा दावों में क्षतिपूर्ति निर्धारण से संबंधित एक सामान्य न्यायिक आदेश प्रतीत हो सकता है, किन्तु वास्तव में इसका महत्व इससे कहीं अधिक व्यापक है। यह निर्णय केवल 30,000 रुपये प्रतिमाह की राशि निर्धारित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि उस दृष्टिकोण में परिवर्तन का प्रतीक है, जिसके माध्यम से सर्वोच्च न्यायालय ने घरेलू श्रम के सामाजिक और आर्थिक मूल्य को स्वीकार किया है। लंबे समय तक भारतीय समाज में घर के भीतर किए जाने वाले कार्यों को प्रेम, कर्तव्य और पारिवारिक दायित्व के रूप में देखा जाता रहा, जबकि उनके आर्थिक महत्व पर अपेक्षित गंभीरता से विचार नहीं किया गया।

निःसंदेह, किसी भी परिवार का सुचारु संचालन केवल आर्थिक आय पर निर्भर नहीं करता। भोजन की व्यवस्था, बच्चों का पालन-पोषण, वृद्धजनों की देखभाल, परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं का समन्वय, घर का प्रबंधन तथा भावनात्मक संतुलन बनाए रखने जैसे असंख्य कार्य प्रतिदिन किए जाते हैं, जिनके लिए कोई वेतन निर्धारित नहीं होता। विडंबना यह है कि जिन कार्यों के बिना परिवार की संरचना की कल्पना भी नहीं की जा सकती, वही कार्य लंबे समय तक आर्थिक मूल्यांकन की प्रक्रिया से बाहर रहे। उक्त निर्णय में सर्वोच्च न्यायालय ने आगे कहा कि 'यह विडंबनापूर्ण है कि गृहिणी को परिवार के कमाने वाले सदस्यों पर आश्रित बताया जाता है, जबकि वास्तविकता यह है कि परिवार की पूरी व्यवस्था और सुचारु संचालन काफी हद तक गृहिणी पर ही निर्भर करता है।' वास्तव में यह टिप्पणी भारतीय समाज में लंबे समय से प्रचलित उस धारणा को चुनौती देती है, जिसके अनुसार आर्थिक आय अर्जित करने वाला व्यक्ति ही परिवार का मुख्य योगदानकर्ता माना जाता है। यदि किसी परिवार की आय उसके आर्थिक आधार को सुदृढ़ करती है, तो घर के भीतर किया जाने वाला श्रम उस आधार को स्थायित्व प्रदान करता है। दोनों में से किसी एक के अभाव में परिवार की संरचना पूर्ण नहीं हो सकती। इसलिए घरेलू श्रम को केवल एक पारिवारिक दायित्व मानना उसके वास्तविक महत्व को कम करके आंकना होगा।

न्यायालय ने अपने निर्णय में यह भी रेखांकित किया कि 'गृहिणियों का योगदान केवल बच्चों के जन्म और पालन-पोषण तक सीमित नहीं है। वे उस मानव पूंजी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिस पर किसी भी राष्ट्र की सामाजिक और आर्थिक प्रगति आधारित होती है।' यह निर्विवादित है कि किसी भी समाज का भविष्य केवल उसके उद्योगों, संस्थानों अथवा आर्थिक नीतियों से निर्मित नहीं होता, बल्कि उन मानवीय मूल्यों, संस्कारों और क्षमताओं से भी निर्मित होता है, जिनका विकास परिवार के भीतर होता है। वर्तमान निर्णय का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि सर्वोच्च न्यायालय ने क्षतिपूर्ति निर्धारण के संबंध में विकसित हो रहे न्यायशास्त्र को भी आगे बढ़ाया है। इस संदर्भ में न्यायालय ने 'नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड बनाम प्रणय सेठी एवं अन्य' के ऐतिहासिक निर्णय का उल्लेख किया, जिसमें क्षतिपूर्ति निर्धारण के लिए कुछ पारंपरिक मदों, जैसे संपत्ति की हानि, साहचर्य की हानि तथा अंत्येष्टि व्यय को मान्यता प्रदान की गई थी।

क्या कहते है आपके सितारें....?

मेष: आज मन खुश रहेगा, लेकिन शरीर में आलस्य बना रहेगा। हालांकि आप के काम योजनानुसार पूरे होंगे। अधूरे काम पूरे होंगे। धन लाभ की संभावना है।

वृषभ: आज का दिन पारिवारिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में लाभ का अवसर लाया है। मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, परंतु दोपहर के बाद आपके मन में कई प्रकार की चिंता उठेगी।

मिथुन: परिश्रम की अपेक्षा फल कम मिलेगा, फिर भी आप मेहनती बने रहेंगे। परिजनों के साथ सम्बंध मधुर होंगे। हेल्थ आज अच्छी रहेगी। हालांकि बाहर खाने-पीने से बचें।

कर्क: आपका आज का दिन मिश्रित फलदायी है। आज आप चिंता से घिरे रहेंगे और शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में भी किसी से मतभेद रहेगा, लेकिन दोपहर के बाद आप सभी कामों में अनुकूलता का अनुभव करेंगे।

सिंह: आज आप सभी कामों को आत्मविश्वास से पूरा कर सकेंगे। सरकार के साथ आर्थिक व्यवहार में भी आपको सफलता मिलेगी। पैतृक संपत्ति से लाभ होगा।

कन्या: दिन की शुरुआत में आप थोड़े कन्फ्यूज रहेंगे। आज आप अपना जिद्दी व्यवहार छोड़ दें। वाणी मधुर बनाए रखें, इससे कोई भी काम आसानी से बना पाएंगे।

तुला: आज का दिन आनंदपूर्वक गुजरेगा। व्यापार करने वालों के लिए आज का दिन लाभदायी है। व्यापार में वृद्धि होगी। परिजनों तथा मित्रों के साथ अच्छे पलों को गुजारेंगे।

वृश्चिक: नए काम शुरू करने के लिए आज का दिन अनुकुल है। आज आप कुछ धार्मिक बने रहेंगे। कार्यालय या व्यावसायिक स्थल पर काम का भार अधिक रहेगा।

धनु: आपका आज का दिन मध्यम फलदायी रहेगा। दिन की शुरुआत में स्फूर्ति और आनंद का अनुभव होगा। आपकी रचनात्मकता से आप कठिन काम भी आसानी से बना पाएंगे।

मकर: सुबह के समय आप शारीरिक रूप से स्वस्थ और मन से खुश रहेंगे। परिजनों और मित्रों के साथ कहीं बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

कुंभ: आज आपकी चिंता में कमी आएगी। आनंद और उत्साह में भी वृद्धि होगी। कुटुंबजनों के साथ व्यवहार अच्छा बनेगा। आर्थिक विषयों पर आप अधिक ध्यान दे पाएंगे।

मीन: खान-पान में आज विशेष ध्यान रखें। आज नए काम का आरंभ करने के लिए समय अनुकूल नहीं है। अधिक कार्य से आलस्य और मानसिक चिंता का अनुभव करेंगे।

मोदी के 12वर्ष : संकल्प से सिद्धि तक भारत की बदलती तस्वीर!

डॉ अरविन्द शर्मा

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 12वर्ष केवल एक राजनीतिक कार्यकाल नहीं, बल्कि भारत के पुनर्निर्माण की एक ऐतिहासिक यात्रा रहे हैं। वर्ष 2014 में जब देश ने उन्हें जनादेश दिया था, तब जनता भ्रष्टाचार, नीति पक्षाघात, कमज़ोर नेतृत्व और वैश्विक मंच पर भारत की फीकी होती पहचान से त्रस्त थी। आज 11 वर्षों बाद भारत विश्व की प्रमुख शक्तियों में गिना जा रहा है।

मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि उसने शासन को सत्ता का साधन नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम बनाया। ग़रीब कल्याण, बुनियादी ढांचे का विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा, डिजिटल क्रांति और भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा—हर क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन दिखाई देता है।

आज करोड़ों गरीब परिवारों को पक्के घर, शौचालय, गैस कनेक्शन, नल से जल और मुफ्त राशन की सुविधा मिल रही है। वर्षों तक गरीबी हटाने के नारे देने वाली सरकारें गरीब को वोट बैंक समझती रहीं, जबकि मोदी सरकार ने उसे सम्मानजनक जीवन देने का काम किया।

प्रधानमंत्री आवास योजना,आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना,और मुफ्त राशन जैसी योजनाओं ने करोड़ों लोगों का जीवन बदला है।

विकास की नई रफ्तार

12वर्षों में भारत ने सड़कों, एक्सप्रेसवे, रेलवे, एयरपोर्ट और बंदरगाहों के निर्माण में नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। जो काम दशकों तक फाइलों में अटका रहता था, वह अब समयबद्ध तरीके से पूरा हो रहा है।

आज भारत दुनिया का सबसे तेजी से बढ़ता प्रमुख आर्थिक राष्ट्र है। मोबाइल निर्माण से लेकर रक्षा उत्पादन तक, भारत आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत अब केवल नारे नहीं, बल्कि आर्थिक वास्तविकता बन चुके हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा पर जीरो टॉलरेंस

मोदी सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत आतंकवाद के सामने झुकेगा नहीं। सीमापार आतंकवाद के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक ने दुनिया को भारत की नई रणनीतिक क्षमता का परिचय कराया।

आज देश की सीमाएं अधिक सुरक्षित हैं और सेना को आधुनिक संसाधनों से सशक्त किया गया है। रक्षा क्षेत्र में स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देकर भारत आयातक से निर्यातक बनने की दिशा में बढ़ रहा है।

डिजिटल इंडिया की क्रांति

11 वर्षों में भारत ने डिजिटल क्रांति का ऐसा मॉडल प्रस्तुत किया है जिसकी चर्चा पूरी दुनिया में हो रही है। यूपीआई ने भुगतान व्यवस्था को बदल दिया।

सरकारी योजनाओं का पैसा सीधे लाभार्थियों के खातों में पहुंच रहा है। इससे भ्रष्टाचार और बिचौलियों की भूमिका में भारी कमी आई है।

आज गांव का छोटा दुकानदार भी डिजिटल भुगतान स्वीकार कर रहा है। यह परिवर्तन भारत के आर्थिक लोकतंत्रीकरण का प्रतीक है।

विश्व मंच पर बढ़ता भारत

एक समय था जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की बात को औपचारिकता से सुना जाता था। आज भारत की राय वैश्विक नीतियों को प्रभावित करती है। जी 20 की नई दिल्ली की सफल मेजबानी ने साबित कर दिया कि भारत केवल सहभागी नहीं, बल्कि वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभाने की क्षमता रखता है। दुनिया के बड़े राष्ट्र आज भारत के साथ साझेदारी को प्राथमिकता दे रहे हैं।

विपक्ष के लिए सबसे बड़ा सवाल यह है कि वह 12वर्षों में लगातार यह कहता रहा कि मोदी सरकार असफल है। यदि ऐसा है तो फिर जनता बार-बार मोदी जी पर विश्वास क्यों जता रही है? क्यों आज भी देश का बड़ा वर्ग उन्हें सबसे विश्वसनीय नेता मानता है? क्यों भारत की अर्थव्यवस्था, आधारभूत संरचना और वैश्विक प्रतिष्ठा लगातार मजबूत हुई है?

लोकतंत्र में आलोचना आवश्यक है, लेकिन आलोचना तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए, पूर्वाग्रहों पर नहीं

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 12वर्षों का मूल्यांकन राजनीतिक चश्मे से नहीं, बल्कि परिणामों के आधार पर होना चाहिए। यह कालखंड गरीब कल्याण, सुशासन, राष्ट्रीय गौरव और विकास की नई परिभाषा गढ़ने का कालखंड रहा है।

भारत आज आत्मविश्वास के साथ विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। यह यात्रा अभी पूरी नहीं हुई है, लेकिन इतना निश्चित है कि पिछले 12वर्षों ने भारत को नई ऊर्जा, नई पहचान और नया आत्मविश्वास दिया है। मोदी सरकार का यह कार्यकाल आने वाली पीढ़ियों के लिए परिवर्तन और संकल्प का एक महत्वपूर्ण अध्याय बनकर दर्ज होगा।

कुमकुम भाग्य एक्ट्रेस संचिता उगले ने सुसाइड किया...

साड़ी का फंदा बनाकर फांसी लगाई, पंखे से लटकी मिली बॉडी

मौत से कुछ घंटे पहले रील पोस्ट की

संचिता उगले का एक्टिंग करियर

नोट: संचिता के जिन प्रोजेक्ट्स की तस्वीर नहीं मिल पाई, वहां उस प्रोजेक्ट के पोस्टर को लगाया गया है।

टीवी एक्ट्रेस संचिता उगले ने सोमवार को सुसाइड कर लिया। वे 22 साल की थीं। पुलिस ने बताया कि एक्ट्रेस का शव घर में सीलिंग फैन से लटका मिला। उन्होंने साड़ी का फंदा बनाकर फांसी लगाई।

एक पुलिस अफसर ने न्यूज एजेंसी [illegible] को बताया, 'हमारी टीम सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची। वहां कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। कोई सुसाइड नोट भी नहीं मिला। घटना के समय वे घर में अकेली थीं। उनके पिता ने बेटी की मौत के लिए किसी को जिम्मेदार नहीं ठहराया।'

संचिता अपने माता-पिता के साथ महाराष्ट्र के पालघर में रहती थीं। वे टीवी सीरियल 'कुमकुम भाग्य' और 'वागले की दुनिया' में नजर आई थीं। पुलिस ने उनका शव पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है और मामले की जांच की जा रही है।

मौत से कुछ घंटों पहले वीडियो पोस्ट किया संचिता के निधन से ठीक कुछ घंटों पहले ही उनके आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट से एक रील पोस्ट की गई थी। वीडियो में एक्ट्रेस डफली वाले, डफली बजा गाने पर लिपसिंक करती दिखी थीं। इस वीडियो के कैप्शन में एक्ट्रेस ने लिखा था, 'मैं नाचूं, तू नचा।'

कमेंट सेक्शन में एक्ट्रेस के फैंस उन्हें श्रद्धांजलि दे रहे हैं। एक्ट्रेस सोशल मीडिया पर बेहद एक्टिव थीं और लगातार पोस्ट करती रहती थीं। उनके इंस्टाग्राम पर 1 लाख 39 हजार फॉलोअर्स हैं।

कई टीवी शोज और फिल्मों का हिस्सा रहीं

संचिता उगले ने कई टीवी शो और फिल्मों में काम किया। वे लोकप्रिय टीवी शो कुमकुम भाग्य, वागले की दुनिया जैसे कई शो का हिस्सा रह चुकी थीं। आखिरी बार वे दंगल टीवी चैनल के शो 'साजन घर में' नजर आई थीं। वे पॉपुलर शो 'दिलवाली दूल्हा ले जाएगी' में सौरभ बेदी के साथ लीड रोल में नजर आ चुकी हैं। संचिता ने फिल्म छावा में भी काम किया था। इसमें वे ताराबाई के किरदार में नजर आई थीं। फिल्म मुख्य भूमिकाओं में विक्की कौशल और अक्षय खन्ना नजर आए थे। इसके अलावा संचिता ने मनोज बाजपेई के साथ साइलेंस 2 : द नाइट आउल बार शूटआउट में भी काम किया था।

Mohammed Rafi का 63 साल पुराना गीत आज भी है आइकॉनिक

लता मंगेशकर के साथ दी थी रोमांटिक गाने को आवाज

63 साल पुराना गीत जो जिस फिल्म से निकला, उसे तो लोगों ने भुला दिया, लेकिन गाना हमेशा के लिए अमर बन गया। यह गीत म्यूजिक इंडस्ट्री के दिग्गज गायक मोहम्मद रफी और स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने गाया था। यह गाना आज भी हिंदी सिनेमा के सबसे आइकॉनिक सॉन्ग्स की लिस्ट में शुमार है। जिस गीत की हम बात कर रहे हैं, वो 1963 में बने ऐतिहासिक फिल्म ताज महल का गाना था। इस फिल्म के ज्यादातर गानों को रफी साहब और लता दीदी ने अपनी आवाज दी थी।

63 साल पुराना गीत हुआ था कल्ट-एम. सादिक के निर्देशन में बनी फिल्म ताज महल बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट रही थी लेकिन सबसे ज्यादा सफलता फिल्म के गानों ने हासिल की। एक गाना इतना पॉपुलर हुआ कि उसके एक-एक बोल आज भी भुलाए नहीं गए हैं। इस गाने के बोल लिखने वाले साहिर लुधियानवी हैं और म्यूजिक डायरेक्टर रोशन हैं। जिस गीत क हम बात कर रहे हैं, वो है जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा।

लता मंगेशकर को मिला था नॉमिनेशन-यह गीत एक रोमांटिक सॉन्ग है जिसे शहजादा खुर्रम (प्रदीप कुमार) और अंजुमन बानो (बीना राय) पर फिल्माया गया था। इस गीत को गाने वाली सुपरहिट ड्यूट लता मंगेशकर और मोहम्मद रफी की थी। इस गाने के लिए लता दीदी फिल्मफेयर अवॉर्ड के लिए बेस्ट प्लेबैक सिंगर के लिए नॉमिनेट भी हुई थीं।

Box Office पर 200 करोड़ की सुनामी के बाद Ram Charan की पेद्दी OTT प्लेटफॉर्म पर देगी दस्तक

राम चरण और जाह्नवी कपूर की स्पोर्ट्स ड्रामा पेद्दी बॉक्स ऑफिस पर 200 करोड़ की कमाई करने के बाद अब ओटीटी पर रिलीज होने के लिए तैयार है। फिल्म के डिजिटल अधिकार नेटफ्लिक्स ने हासिल कर लिए हैं और यह 16 से 30 जुलाई के बीच स्ट्रीम हो सकती है, हालांकि आधिकारिक तारीख की घोषणा बाकी है। साल 2026 की सबसे कमाई ज्यादा कमाई करने वाली धुरंधर 2 मूवी के बाद दूसरी पैन इंडिया रिलीज फिल्म पेद्दी फिलहाल बॉक्स ऑफिस पर धमाकेदार कमाई कर रही है। बात करें घरेलू बॉक्स ऑफिस पर पेद्दी ने 200 करोड़ के कलेक्शन की तरफ बढ़ती नजर आ रही है, वहीं दुनियाभार मेंपेद्दी को काफी प्यार मिल रहा है। रामचरण की स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म 4 जून को सिनेमाघरों में रिलीज हुई है, जिसे दर्शको से अच्छा रिस्पॉन्स मिला है, जल्द ही यह फिल्म [illegible] प्लेटफॉर्म पर दस्तक देने जा रही है। इसके जानकारी सामने आ चुकी है।

किस [illegible] प्लेटफॉर्म पर आएगी पेद्दी

तक्त मैगजीन के अनुसार, सिनेमाघरों में तहलका मचाने के बाद पेद्दी ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी। इसका हिंट बुची बाबू के निर्देशन में बनी इस मूवी के ओपनिंग क्रेडिट सीन में ही मेकर्स ने दिया था। नेटफ्लिक्स फिल्म का स्ट्रीमिंग पार्टनर है। अब उम्मीद लगाई जा रही है कि राम चरण और जाह्नवी कपूर स्टारर स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म 16 जुलाई से 30 जुलाई के बीच ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज की जा सकती हैं। लेकिन अभी तक मेकर्स ने तारीख का ऐलान नहीं किया कि कब पेद्दी नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी।

क्या राम चरण की पेद्दी की कहानी?

राम चरण की पैन इंडिया फिल्म पेद्दी की कहानी एक टैलेंटेड गांव के लड़के के इर्द-गिर्द घूमती है, जो अपने आजीविका के लिए स्थानीय स्तर पर क्रिकेट खेलता है और कुश्ती में भी हिस्सा लेता है।

स्वास्थ्य

रोज पिएं करेला, खीरा और टमाटर का जूस, मिलेंगे ये फायदे

करेला, खीरा और टमाटर का सेवन अधिकतर लोग करते ही हैं। ये सभी पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। अकसर लोग करेला और टमाटर को सब्जी के रूप में खाते हैं। वहीं खीरे का सेवन सलाद के रूप में किया जाता है। आप इन तीनों को जूस के रूप मे एक साथ ले सकते हैं।

आप करेला, खीरा और टमाटर के जूस का सेवन कर सकते हैं। आपको बता दें कि करेले में प्रोटीन, फाइबर, सोडियम, विटामिन ए, विटामिन सी और कैल्शियम अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। इसके अलावा करेले में पोटेशियम, नियासिन और थायमिन भी होता है। इसी के साथ खीरे में प्रोटीन और पानी अधिक मात्रा में होते हैं। टमाटर भी पोषक तत्वों का अच्छा सोर्स होता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं।

ब्लड शुगर को कंट्रोल करे : करेला, खीरा और टमाटर का जूस प्रीडायबिटीज वाले लोगों के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है। अगर आपको प्रीडायबिटीज का निदान हुआ है, तो आप रोजाना करेला, खीरा और टमाटर का जूस पी सकते हैं। करेला, खीरा और टमाटर का जूस पीने से आपका ब्लड शुगर का स्तर कम हो सकता है। रोजाना इस जूस को पीकर आप डायबिटीज को नियंत्रित कर सकते हैं।

कब्ज से छुटकारा दिलाए : अगर आपको अकसर ही कब्ज बनी रहती है, तो आप रोजाना करेला, खीरा और टमाटर का जूस पी सकते हैं। करेला और खीरे में फाइबर होता है, जो भोजन को पचाने में मदद कर सकता है। इससे भोजन अच्छे से डाइजेस्ट होता है, आंतों की सफाई होती है और कब्ज से छुटकारा मिल सकता है। करेला, खीरा और टमाटर का जूस पीने से आपका पेट आसानी से साफ हो सकता है।

इम्यूनिटी बूस्ट करे : सर्दियों में करेला, खीरा और टमाटर का जूस पीने से आपकी इम्यूनिटी बूस्ट हो सकती है। टमाटर में विटामिन सी पाया जाता है, यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मददगार साबित हो सकता है। अगर आपको बार-बार सर्दी-जुकाम और खांसी जैसी दिक्कतें हो रही हैं, तो आप करेला, खीरा और टमाटर का जूस पी सकते हैं।

स्किन साफ करे : करेला, खीरा और टमाटर का जूस पीना आपकी स्किन के लिए भी फायदेमंद हो सकता है। रोजाना करेला, खीरा और टमाटर का जूस पीने से आपकी स्किन से जुड़ी समस्याएं दूर हो सकती हैं। इस जूस को पीने से पेट साफ होता है, टॉक्सिंस बाहर निकलते हैं। इससे स्किन की त्वचा निखरी हुई लगती है। साथ ही त्वचा के दाग-धब्बों से भी छुटकारा मिलता है।

हृदय रोगों का जोखिम कम करे : आजकल हृदय रोगों के मामलों में लगातार वृद्धि हो रही है। ऐसे में करेला, खीरा और टमाटर का जूस पीना फायदेमंद हो सकता है। रोजाना करेला, खीरा और टमाटर का जूस पीने से आपको हृदय रोग का जोखिम कम होने में मदद मिल सकती है।

सुबह खाली पेट पिएं पानी में उबालकर पिएं एलोवेरा, सेहत और स्किन को मिलेंगे कई फायदे

सेहत, बाल और स्किन के लिए एलोवेरा बहुत फायदेमंद माना जाता है। एलोवेरा के पोषक तत्व शरीर को अंदर से हाइड्रेट रखने में मदद करते हैं, जिससे कई बीमारियों से राहत पाने में मदद मिल सकती है। कुछ लोग एलोवेरा का जूस पीते हैं, कुछ लोग इसके पत्ते काटकर चेहरे पर लगाते हैं तो कुछ बाजार में मिलने वाले इसके जेल का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि एलोवेरा के पत्तों को काटकर पानी में उबाला जाए और इसको सुबह खाली पेट पिए जाए तो न सिर्फ आपकी सेहत को दुरुस्त कर सकते हैं बल्कि स्किन और बालों को भी चमका सकते हैं।

वजन घटाने में मददगार

एलोवेरा शरीर का वजन और मोटापा घटाने में भी मदद करता है। एलोवेरा में मौजूद पोषक तत्व शरीर को एनर्जी देने का भी काम करते हैं।

इम्यूनिटी को बनाता है मजबूत

एलोवेरा विटामिन सी से भरपूर होता है। विटामिन सी हमारे शरीर के लिए आवश्यक है। ये हमारी इम्यूनिटी को मजबूत रखने में मदद करता है। इसके अलावा शरीर में होने वाली सूजन को भी कम करने में मदद कर सकता है।

स्किन को बनाता है ग्लोइंग

उम्र या किन्हीं कारणों से जिन लोगों के चेहरे पर पिंपल्स, एक्ने मार्क्स और दाने हो गए हैं उनके लिए भी एलोवेरा का सेवन काफी फायदेमंद साबित हो सकता है। एलोवेरा के पोषक तत्व स्किन को अंदर से हाइड्रेट रखते हैं और पिंपल्स, झुर्रियां समेत कई स्किन प्रॉब्लम से छुटकारा दिलाते हैं। आप चाहें तो एलोवेरा के इस पानी को चेहरे पर कॉटन बॉल की मदद से लगा भी सकते हैं।

एलोवेरा के पोषक तत्व

एलोवेरा में विटामिन ए, सी, ई, फोलिक एसिड, कोलीन, बी1, बी2, बी3 और बी6 जैसे कई पोषक तत्व पाए जाते हैं। एलोवेरा उन पौधों में भी शामिल है जिसमें विटामिन बी12 भी पाया जाता है। इसके साथ ही एलोवेरा मिनरल्स जिनमें कैल्शियम, मैग्नीशियम, जिंक, क्रोमियम, सेलेनियम, सोडियम, आयरन, पोटैशियम, कॉपर का भी अच्छा सोर्स माना जाता है। आइए जानते हैं एलोवेरा को पानी में कैसे उबालें और सेवन का तरीका।

एलोवेरा का सेवन कैसे करें?

- इसके लिए सबसे पहले एक बाउल में फ्रेश एलोवेरा की पत्तियों को लेकर छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें।
- इसके बाद एलोवेरा को पानी से अच्छे से धो लीजिए और एक साइड में रख लीजिए।
- अब एक सॉस पैन में 2 गिलास पानी को हल्का गर्म करें और इसमें कटा हुआ एलोवेरा डालें।
- पानी के साथ एलोवेरा को 5 मिनट तक पकाएं और ठंडा होने के बाद छलनी की मदद से छान लें।
- आपका एलोवेरा वाला पानी तैयार हो चुका है। आप इसे सुबह खाली पेट ऐसे ही पी सकते हैं।
- जिन लोगों को एलोवेरा का स्वाद पसंद नहीं आता है वो इस पानी में थोड़ा सा शहद डाल सकते हैं।

पाचन संबंधी समस्याओं को करता है दूर

एलोवेरा में लैक्सेटिव तत्व पाए जाते हैं, जो पाचन संबंधी समस्याओं से पचाने में मदद कर सकते हैं। जिन लोगों को एसिडिटी, गैस और खाना पचाने में परेशानी होती है उन्हें नियमित तौर पर एलोवेरा का सेवन करने की सलाह दी जाती है।

पीएम बोले- ब्रातिस्लावा में बनारस का कनेक्शन! कलाकारों की सराहना कर कही खास बात

ब्रातिस्लावा । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्लोवाकिया दौरे के दौरान राष्ट्रपति पीटर पेलेग्रिनी के साथ ब्रातिस्लावा में वाराणसी पर आधारित विशेष कला प्रदर्शनी देखी। स्लोवाकियाई कलाकारों की कृतियों में बनारस की संस्कृति और विरासत को दर्शाया गया था। पीएम मोदी ने इसे भारत-स्लोवाकिया सांस्कृतिक संबंधों का प्रतीक बताया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्लोवाकिया की अपनी दो दिनों की ऐतिहासिक यात्रा पूरी कर ली है। साल 1993 में स्लोवाकिया की आजादी के बाद यह किसी भारतीय प्रधानमंत्री का पहला दौरा था। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई, शिक्षा और रोजगार जैसे कई अहम क्षेत्रों में बड़े समझौते हुए। दोनों देशों ने अपने रिश्तों को अब 'व्यापक साझेदारी' का दर्जा दिया है। अपनी इस यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने स्लोवाकिया के राष्ट्रपति पीटर पेलेग्रिनी के साथ राजधानी ब्रातिस्लावा के राष्ट्रपति महल में एक खास प्रदर्शनी देखी। इस प्रदर्शनी का मुख्य केंद्र भारत का प्राचीन और पवित्र शहर वाराणसी (बनारस) था। इसमें उन स्लोवाकियाई कलाकारों की कलाकृतियां शामिल थीं, जिन्होंने हाल ही में वाराणसी की यात्रा की थी। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया पर इस अनुभव को साझा करते हुए इसे 'ब्रातिस्लावा में बनारस का जुड़ाव' बताया। पीएम ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा 'ब्रातिस्लावा में बनारस से जुड़ाव! कल ब्रातिस्लावा के राष्ट्रपति भवन में, राष्ट्रपति पेलेग्रिनी और मैंने वाराणसी पर केंद्रित एक आकर्षक प्रदर्शनी देखी।

लेबनान से इस्रायल का कब्जा हटने पर ही खत्म होगी जंग : ईरान

ईरान । ईरान के विदेश मंत्री ने बड़ा बयान देते हुए कहा है कि ईरान युद्ध की समाप्ति में लेबनान पर इस्रायल के कब्जे का खत्म होना भी शामिल है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, विदेश मंत्री ने कहा लेबनान की आजादी इस संघर्ष को खत्म करने के लिए एक जरूरी शर्त है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि ईरान कभी भी परमाणु हथियार नहीं रखने के लिए सहमत हो गया है। उन्होंने यह भी साफ किया कि अमेरिका से ईरान को 300 मिलियन डॉलर देने की बात पूरी तरह झूठी खबर है। ट्रंप ने आरोप लगाया कि यह गलत खबर उनके विरोधियों ने फैलाई है।

इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने सोमवार को कहा कि इस्राइली सेना गाजा, लेबनान और सीरिया में 'जब तक जरूरत होगी, तब तक' तैनात रहेगी। यह बयान ऐसे समय आया, जब कुछ घंटे पहले ही ईरान और अमेरिका के बीच पश्चिम एशिया में युद्ध खत्म करने को लेकर समझौते की घोषणा की गई थी। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में नेतन्याहू ने कहा, हमने इस्राइल के चारों ओर गहरे सुरक्षा क्षेत्र बनाए हैं। हमने यह गाजा, लेबनान और सीरिया में किया है। उन्होंने आगे कहा, और मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि हम अपने देश की सुरक्षा के लिए इन सुरक्षा क्षेत्रों में उतनी ही देर तक रहेंगे, जब तक आवश्यकता होगी। ईरान की सेना ने कहा कि अमेरिका के साथ समझौता लागू होने के बावजूद वह पूरी तरह सतर्क स्थिति में बनी रहेगी। ईरानी सेना के एक प्रवक्ता ने बताया कि इस दौरान सशस्त्र बलों की तैयारियों का स्तर पहले से भी अधिक बनाए रखने की योजना है।

फलस्तीन और ओआईसी ने सोमालीलैंड की आलोचना की

फलस्तीन और इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) ने यरूशलम में सोमालीलैंड के दूतावास खुलने की निंदा की है और इसे अंतरराष्ट्रीय कानून का 'स्पष्ट उल्लंघन' बताया है। यह मामला तब सामने आया, जब सोमालिया से अलग हुए क्षेत्र सोमालीलैंड के राष्ट्रपति अब्दिरहमान मोहम्मद अब्दुल्लाही ने सोमवार को अपने पहले इस्राइल दौरे के दौरान दूतावास का उद्घाटन किया। पिछले वर्ष दिसंबर में इस्राइल ने सोमालीलैंड को मान्यता दी थी, जिसकी अरब लीग, ओआईसी और अफ्रीकी संघ ने आलोचना की थी। दौरे के दौरान अब्दुल्लाही ने इस्राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से मुलाकात की और दोनों देशों के बीच रणनीतिक सहयोग को लेकर एक संयुक्त समझौते पर हस्ताक्षर किए।

जल्द सार्वजनिक किया जाएगा समझौते का विवरण: ट्रंप

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोमवार को कहा कि अमेरिका और ईरान के बीच हुए समझौते का पूरा विवरण जल्द ही सार्वजनिक किया जाएगा। उन्होंने इसे 'बहुत शक्तिशाली दस्तावेज' बताया।

यह बयान उन्होंने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ एवियन में हुई द्विपक्षीय बैठक के दौरान दिया, जो जी7 शिखर सम्मेलन के दौरान आयोजित की गई थी। ट्रंप ने कहा कि दस्तावेज संभवतः औपचारिक हस्ताक्षर समारोह के बाद जारी किया जाएगा, जिसकी उम्मीद इस सप्ताह के अंत में की जा रही है।

PM मोदी को मिला स्लोवाकिया का सर्वोच्च सम्मान: अब तक 33 देशों ने किया सम्मानित

ब्रातिस्लावा । स्लोवाकिया ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'द ऑर्डर ऑफ द व्हाइट डबल क्रॉस (फर्स्ट क्लास)' से सम्मानित किया है। इसके साथ ही पीएम मोदी को विभिन्न देशों द्वारा दिए गए अंतरराष्ट्रीय सम्मानों की संख्या 33 हो गई है। यह प्रतिष्ठित सम्मान उन विदेशी नेताओं को दिया जाता है, जिन्होंने स्लोवाकिया के साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने, मित्रता बढ़ाने और देश की विदेश नीति तथा वैश्विक प्रतिष्ठा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया हो। स्लोवाकिया ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान द ऑर्डर ऑफ द व्हाइट डबल क्रॉस से सम्मानित किया है। स्लोवाकिया के राष्ट्रपति पीटर पेलेग्रिनी ने उन्हें यह सम्मान प्रदान किया। इसके साथ ही प्रधानमंत्री मोदी को किसी देश द्वारा प्रदान किया गया यह 33वां अंतरराष्ट्रीय सम्मान बन गया है। 'द ऑर्डर ऑफ द व्हाइट डबल क्रॉस स्लोवाक गणराज्य का सर्वोच्च राजकीय सम्मान है।

पीएम नरेंद्र मोदी ने स्लोवाकिया द्वारा सर्वोच्च सम्मान दिए जाने पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि ब्रातिस्लावा में द ऑर्डर ऑफ द व्हाइट डबल क्रॉस का सम्मान प्राप्त करके मैं सम्मानित महसूस कर रहा हूं। भारत की 140 करोड़ जनता के इस सम्मान के लिए मैं स्लोवाकिया की जनता और सरकार का आभारी हूं। मैं यह पुरस्कार भारत और स्लोवाकिया के बीच अटूट मित्रता को समर्पित करता हूं।

* **नॉर्वे: ग्रैंड क्रॉस ऑफ द रॉयल नॉर्वेजियन ऑर्डर ऑफ मेरिट**
* **स्वीडनें: रॉयल ऑर्डर ऑफ द पोलर स्टार**
* **सऊदी अरबें: किंग अब्दुलअजीज सैश**
* **अफगानिस्तानें: गाजी अमीर अमानुल्लाह खान**
* **फलस्तीनें: ग्रैंड कॉलर ऑफ द स्टेट ऑफ फलस्तीन**
* **संयुक्त अरब अमीरातें: ऑर्डर ऑफ जायद**
* **रूसें: ऑर्डर ऑफ सेंट एंड्रयू द एपोस्टल**
* **मालदीवें: निशान इज्जुद्दीन**

6.3 की तीव्रता से कांपा चीन: 40 मिनट में लगे आठ भूकंप के झटके

चीन । चीन के किंगहाई प्रांत में मंगलवार शाम 6.3 तीव्रता का शक्तिशाली भूकंप आया, जिसका केंद्र हैक्सी प्रान्त में 10 किलोमीटर गहराई पर था। कम आबादी वाले इस पर्वतीय क्षेत्र में 5 तीव्रता के आफ्टरशॉक्स भी महसूस किए गए हैं। चीन का किंगहाई प्रांत मंगलवार को तेज भूकंप के झटकों से दहल उठा। रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 6.3 मापी गई है। इस शक्तिशाली झटके के बाद पूरे इलाके में दहशत का माहौल बन गया। लोग डर के मारे अपने घरों और दफ्तरों से बाहर निकल आए। भूकंप का केंद्र हैक्सी प्रान्त में था। चीनी प्रशासन ने तुरंत राहत और बचाव दल को अलर्ट मोड पर डाल दिया है। भूकंपीय वेधशाला के अनुसार, यह भूकंप स्थानीय समयानुसार शाम करीब 5:06 बजे आया। धरती के भीतर महज 10 किलोमीटर की गहराई पर इसका केंद्र था। गहराई कम होने की वजह से झटके बेहद तेज महसूस किए गए। भूकंप का केंद्र हैक्सी प्रान्त का पहाड़ी और सुदूर इलाका है। झटका इतना तेज था कि आसपास के कई जिलों में भी धरती हिलने की खबर है। शुरुआती झटके के बाद लोग काफी देर तक सहमे रहे।

40 मिनट में लगे आठ बड़े झटके

स्थानीय आपदा प्रबंधन और चीनी मीडिया के हवाले से बेहद चौंकाने वाले आंकड़े सामने आ रहे हैं। चीनी मीडिया के मुताबिक, महज 40 मिनट के भीतर इलाके में करीब आठ बार भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए।

राजस्थान में पानी के लिए किसानों का उग्र प्रदर्शन, दिल्ली-मुंबई रेलवे ट्रैक जाम; महापंचायत जारी

करौली । राजस्थान में करौली और सवाई माधोपुर जिले के किसानों के बीच पांचना बांध का पानी नहरों में छोड़ने का मुद्दा अब बड़ा जनआंदोलन और राजनीतिक विषय बनता जा रहा है. वजीरपुर उपखंड के खंडीप गांव में चल रही किसान महापंचायत मंगलवार को 12वें दिन भी जारी रही. इस बीच आंदोलन उस समय उग्र हो गया जब बड़ी संख्या में किसान, महिलाएं और ग्रामीण दिल्ली मुंबई रेलवे ट्रैक पर पहुंच गए और करीब एक घंटे तक प्रदर्शन करते हुए रेलवे ट्रैक जाम कर दिया. सूचना पर पहुंची पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों ने समझाइश कर ट्रैक खाली कराया.

39 गांवों के लोगों की बांध पर निगरानी: दरअसल, नहरों में पानी छोड़े जाने और उच्च न्यायालय के आदेशों की पालना की मांग को लेकर हजारों किसान आंदोलन में डटे हुए हैं. वहीं दूसरी ओर पांचना बांध पर 39 गुर्जर बहुल गांवों द्वारा निगरानी लगातार जारी है. खंडीप गांव में आयोजित अनिश्चितकालीन महापंचायत में प्रतिदिन अलग-अलग गांवों की जिम्मेदारी तय की जा रही है. क्षेत्र के हजारों महिला-पुरुष ट्रैक्टरों, बसों और अन्य वाहनों से धरना स्थल पहुंच रहे हैं. रामरसिया, पद दंगल और जनजागरण कार्यक्रमों के माध्यम से आंदोलन को निरंतर गति दी जा रही है.

भीलवाड़ा में जसवंतपुरा गांव के तालाब का पानी जहरीला, हैंडपंप से पानी भरने पर रोक

भीलवाड़ा । भीलवाड़ा से 35 किलोमीटर दूर बनेड़ा ब्लॉक के जसवंतपुरा गांव का प्राचीन घाट तालाब जहरीला हो गया है. तालाब में मछलियां और पानी पीने के बाद पशुओं की मौत से गांव में हड़कंप मचा हुआ है. पशुओं की मौत के बाद प्रशासन चेता और तालाब की जिला मुख्यालय पर स्थित जलदाय विभाग की लैब में जांच कराई. जांच रिपोर्ट में तालाब का पानी उपयोग करने लायक नहीं बताया गया. पानी जहरीला बताया.

गांव में सर्वे शुरू : प्रशासन ने आनन-फानन में तालाब पर चेतावनी बोर्ड लगा दिया. मेडिकल टीम से गांव में सर्वे शुरू कराया गया. गांव में घर-घर जाकर एएनएम और महिला बाल विकास विभाग की आशा सहयोगिनी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सर्वे कर रही हैं. ग्रामीणों की एक टीम प्राचीन घाट पूजन वाले तालाब पर पहरा दे रही है,

पाकिस्तान भरोसे लायक नहीं, तीन बार यूएस को दे चुका धोखा- US

वॉशिंगटन । अमेरिका के विशेषज्ञ माइकल रुबिन ने ईरान युद्ध में पाकिस्तान की मध्यस्थता पर गंभीर सवाल उठाए हैं और आरोप लगाया है कि पाकिस्तान अंतिम समझौता नहीं होने देगा और ऐसी स्थिति बनाए रखेगा, जहां तनाव और अराजकता बनी रहेगी।

अमेरिकी विश्लेषक माइकल रुबिन ने ईरान और अमेरिका के बीच जारी कूटनीतिक प्रयासों में पाकिस्तान की भूमिका पर तीखी टिप्पणी करते हुए कहा है कि ईरान संकट के समाधान के लिए पाकिस्तान पर भरोसा करना, ऐसा ही है जैसे द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नाजी जर्मनी की समस्या सुलझाने के लिए फासीवादी इटली पर निर्भर रहना।

फासीवादी इटली से की पाकिस्तान की तुलना

अमेरिका के मिडिल ईस्ट फोरम में नीति विश्लेषण निदेशक माइकल रुबिन ने भारतीय न्यूज एजेंसी एएनआई के साथ बातचीत में कहा कि पाकिस्तान को भरोसेमंद मध्यस्थ नहीं माना जा सकता, क्योंकि उसने अतीत में कई बार अमेरिका के हितों को नुकसान पहुंचाया है।

कुरुक्षेत्रः राहुल को प्रतिरोध का नारा बनाएगा विपक्ष का चेहरा, 2029 में PM मोदी और नेता विपक्ष का सीधा मुकाबला

नई दिल्ली । लोकसभा चुनाव में अभी तीन साल का वक्त है लेकिन राजनीति जिस दिशा में चल पड़ी है, उससे साफ जाहिर है कि न सिर्फ 2029 में होने वाले लोकसभा चुनाव बल्कि अब 2029 तक जितने भी चुनाव होंगे सब में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और नेता विपक्ष राहुल गांधी के बीच ही सीधा मुकाबला होगा। अगर सब कुछ ठीक रहा तो इस बार लोकसभा चुनावों में कांग्रेस राहुल गांधी को अपने नेता और भावी प्रधानमंत्री का उम्मीदवार घोषित करके चुनाव लड़ेगी और इससे सहमति असहमति सहयोगी दलों पर छोड़ देगी। उधर स्वाभाविक रूप से एनडीए और भाजपा का चेहरा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही रहेंगे। इसका संकेत खुद राहुल गांधी ने विपक्षी इंडिया गठबंधन की बैठक में दिए गए अपने भाषण में दिया। उन्होने कहा कि अब देश में चुनावों की परंपरागत राजनीति से आगे प्रतिरोध की राजनीति का युग आ गया है।

प्रतिरोध की राजनीति से राहुल गांधी का सीधा मतलब है कि मोदी सरकार को संसद के साथ-साथ विपक्ष अब सड़क पर भी घेरेगा। राहुल ने कहा कि सभी संस्थाएं सरकार के कब्जे में हैं और चुनावों का कोई मतलब नहीं रह गया है। इसलिए कांग्रेस को प्रतिरोध की राजनीति के अपने पुराने दौर में लौटना होगा। राहुल ने सिर्फ एलान ही नहीं किया बल्कि उन्होंने प्रतिरोध की राजनीति की शुरुआत करते हुए सबसे पहले युवाओं और छात्रों से सीधे संवाद करने के कार्यक्रम की घोषणा कर दी है।

बच्चे को बचाने पार्वती नदी में उतरे 4 लोगों की डूबने से मौत

छबड़ा (बारां) । जिले के छबड़ा क्षेत्र स्थित गुगोर पार्वती नदी में मंगलवार को एक दर्दनाक हादसा हो गया. नदी में नहाने के दौरान एक बच्चा गहरे पानी में चला गया. उसे बचाने के लिए उतरे चार लोग गहरे पानी में डूब गए, जिससे उनकी मौत हो गई. घटना के बाद क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई. छबड़ा थाना अधिकारी राजेश खटाना ने बताया कि सोमवार रात गांव में शादी समारोह में शामिल होने आए चार लोग मंगलवार को पार्वती नदी में नहाने गए थे. गुड्डी बाई का 5 साल का बच्चा शबीर गहरे पानी में चला गया, जिसको बचाने के लिए गुड्डी बाई और अन्य लोग दौड़े. घटना में बच्चे को बचा लिया गया, लेकिन चार लोग डूब गए. चारों की मौत हो गई. सभी का पोस्टमार्टम करा शव परिजनों को सौंप दिए गए हैं. जानकारी के अनुसार 3 युवक व एक महिला एक शादी समारोह में शामिल होने के लिए गुगोर आए हुए थे. इसी दौरान वे पार्वती नदी में नहाने के लिए गए, जहां अचानक गहरे पानी में चले जाने से डूब गए. हादसे की सूचना मिलते ही स्थानीय

लोगों और प्रशासन ने राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया. काफी मशक्कत के बाद चारों को नदी से बाहर निकाला गया और तत्काल छबड़ा चिकित्सालय लाया गया. यहां चिकित्सकों ने जांच के बाद चारों को मृत घोषित कर दिया. घटना की सूचना मिलने पर छबड़ा पुलिस भी मौके पर पहुंची और सभी शवों को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू की. शवों को छबड़ा चिकित्सालय की मोर्चरी में रखवाया गया है. निवासी हट्टी मिल गुना मध्य प्रदेश, सलाम (22) पुत्र रशीद खान, निवासी नया मोहल्ला छीपाबड़ौद, यूनुस खान (18) पुत्र बंटी गोरी, हट्टी मिल गुना मध्य प्रदेश के रूप में की गई है.

बड़ा बयान: गहलोत बोले- हिंदू राष्ट्र बन चुका है देश, औपचारिक घोषणा होना बाकी

जयपुर । राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने एक बार फिर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और बीजेपी पर हमला बोला है. गहलोत ने कहा कि आरएसएस को कांग्रेस का शुक्रिया अदा करना चाहिए कि उसने कभी भी आरएसएस को टारगेट करके कार्रवाई नहीं की. अगर आज की बीजेपी की तरह बदले की भावना से कार्रवाई करते तो आरएसएस और भाजपा कहीं नहीं पनपती. गहलोत ने मंगलवार को अपने आवास पर पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि देश आज हिंदू राष्ट्र बन चुका है, केवल औपचारिक घोषणा होना बाकी है. पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि बाकी धर्मों के लोगों को दबाया जा रहा है. उन्होंने कहा कि देश और प्रदेश में पहली बार देखा है कि क्रिसमस के मौके पर चर्च पर हमले हो रहे हैं, गुंडागर्दी हो रही है. पूर्व सीएम ने कहा- यह मैं सोच-समझकर बोल रहा हूं, आरएसएस पर बैन लगा भी है और हटा भी है.

उसकी वजह यह है कि कांग्रेस की सॉफ्ट अप्रोच थी. उसकी वजह से आरएसएस ने 100 साल पूरे कर लिए हैं, नहीं तो जैसा व्यवहार आज आरएसएस और भाजपा कांग्रेस और विपक्षी दलों के साथ कर रहे हैं, अगर यही तरीका कांग्रेस पार्टी भी अपनाती तो आज बीजेपी और आरएसएस पनपती भी नहीं. पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि कोटा में 17 जून को राहुल गांधी विद्यार्थियों से संवाद करेंगे, लेकिन लोकसभा स्पीकर ओम बिरला के लोगों की ओर से कोचिंग संस्थानों को धमकाया जा रहा है.उन्होंने कहा कि इस मामले में बिड़ला को अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए, क्योंकि ओम बिड़ला लोकसभा के स्पीकर हैं ।

राहुल गांधी कोटा आ रहे हैं तो उनका स्वागत करना चाहिए था. जिस तरह का व्यवहार किया जा रहा है, उस पर बिड़ला अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए. पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि राहुल गांधी कोटा आ रहे हैं, इसीलिए ही बीजेपी के तमाम नेता चारों दिशाओं में फेल कर अनर्गल बयान बाजी कर रहे हैं.

गांधी की हत्या के बाद दो बार लगाया था बैन

पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि महात्मा गांधी की हत्या के बाद आरएसएस पर दो बार प्रतिबंध लगाया था. उन्होंने माफी मांगी, उसके बाद फिर बैन हटा दिया. माफी तो कई बार मांग चुके हैं. कांग्रेस की सरकार केंद्र और राज्य में कई बार बनी है, बदले की भावना हमारे खून में नहीं है कि हम आरएसएस के लोगों को टारगेट करें. आरएसएस के लोग स्वयं कहते हैं कि भाजपा की सरकार से ज्यादा कांग्रेस की सरकार में हमारे काम होते हैं. कांग्रेस सरकारों ने किसी भी आरएसएस के व्यक्ति या उसके परिवार पर कभी टारगेट करके कार्रवाई नहीं की, जबकि आज यही लोग कांग्रेस और विपक्षी पार्टियों पर टारगेट करके कार्रवाई कर रहे हैं.

आरएसएस जवाब दे, इतना पैसा कहां से आया

पूर्व मुख्यमंत्री ने कर्नाटक के गृह मंत्री प्रियंक खड़गे की बात का समर्थन करते हुए कहा कि आरएसएस को बताना चाहिए कि इतना पैसा उनके पास कहां से आया है. दिल्ली में अरबों रुपए का संघ का भवन बना है. भाजपा के भी 800 भवन बन गए हैं, आखिर इतना पैसा कहां से आ रहा है. चाल, चरित्र और चेहरे की बात करने वाली पार्टी के पास पैसा कहां से आ रहा है. इसलिए जनता को बताना चाहिए.

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक संपादक: नीरज मेहरा द्वारा बोनस ग्राफिक्स, लक्ष्मी नगर, झोटवाड़ा मार्ग, अजमेर रोड़, जयपुर-302006 से मुद्रित एवं 141, दयानन्द नगर, फेज प्रथम झालाना डूंगरी गली नंबर 19, थाना गांधी नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रबंध संपादक- पी.के.बृजवाल, 9950325930, 9571635930 (कानूनी सलाहकार एडवोकेट कैलाशनाथ भट्ट)